भक्ति मार्ग

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

भक्ति मार्ग में भक्त सर्वात्मना अपने को प्रभु चरणों में समर्पित कर देता है। मैं जैसा हूॅ, वैसा आपके चरणों में समर्पित हूॅ, यह भाव भक्त का होना चाहिए। भारत में भक्ति मार्ग के उदय तेरहवी चौदहवीं शताब्दी में हुआ था। करीब, सूर, तुलसी, जायसी, मीराबाई जैसे भक्त संतों ने जनता के हृदय में आशा का संचार किया। मुगलों के अत्याचार से प्रजा पीड़ित थी। प्रजा में निराशा और हताशा का भाव था। भक्त कवियों ने जनता में ईश्वर का सम्बल प्रदान कर एक नई ज्योति जलाई। इससे जनता में नवीन चेतना जागृत हुई। जनता ने मुगलों के अत्याचार को सहनकर अपनी सहनशीलता का परिचय दिया। साहित्य समाज का दर्पण होता है। साहित्य में युगीन समस्याओं को समेटने की क्षमता होती है। भक्त कवियों ने जनता में एक नई चेतना जागृत कर ईश्वर के चरणों में लगा दिया। भक्त मार्ग समर्पण का मार्ग है। भक्ति मार्ग अहंकार को नष्ट कर देता है। भक्ति मार्ग हमें यह सिखलाता है कि हरि का भजे सो हरि का होई। अर्थात् जो भगवान के चरणों में अनुराग रखता है वह भगवान का हो जाता है। ऐसा करने से न तो सुख होता हे और न दुख, न राग होता है और द्वेष। सभी प्राणियों के प्रति समता भाव आ जाता है। जब कुछ अपना रहता ही नहीं तो सुख दुख कैसा? भक्ति भावना से पूर्व व्यक्ति सेवाभावी हो जाता है। वह निःस्वार्थ हो जाता है। ईश्वर के चरणों में सब कुछ समर्पित कर व्यक्ति चिंता मुक्त हो जाता है। भारत के लोगों में तो भक्ति भावना देखी ही जाती है विदशी भी यहां आकर इस मार्ग के अनुयायी हो रहे हैं। भक्ति का मार्ग सीधा–साधा मार्ग है। सामाजिक उपयोगिता की दृष्टि से इस विषय का बहुत महत्व है। आज के विश्व की सबसे बड़ी समस्या है तनाव। तनाव को दूर करने का सबसे सुगम मार्ग है भक्ति मार्ग। इस मार्ग को स्वीकार कर व्यक्ति चिंता मुक्त हो जाता है। गीता में जीवन यापन के तीन मार्ग बतलाए गए है– भक्ति मार्ग, ज्ञान मार्ग और कर्म मार्ग। भक्ति माग्र श्रेष्ठ मार्ग है

जब साधक अहंकार मुक्त होकर प्रभु चरणों में अपने को समर्पित कर देता है तो ईश्वर भक्त पर कृपा दृष्टि डालता है। भक्ति का मार्ग भक्तों को सब कुछ प्रदान कर देता है।

अध्यात्म का अर्थ है आत्मा में रहना। जीव और जगत् के भेद को जानना और मानना। संसार को ही सबकुछ मानकर न रहना। पारलौकिकता के बारे में चिंतन करना। इस संसार में मानव लौकिक और पारलौकिक जगत के विषय में चिंतन करता है। लौकिक से तात्पर्य इस लोक से है जिसमें हम रहते है। सभी प्राणी इस लोक में ही अपनी जीवन लीला करते है। एक इन्द्रिय से लेक पंचेन्द्रिय प्राणी तक सभी जीव है। चेतना का स्तर सब में भिन्न–भिन्न है। मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो लौकिक और पारलौकिक जगत के विषय में सोचता है। धर्म कर्म करता है। अन्य प्राणी केवल इन्द्रिय के वशीभूत होकर के ही कार्य करते है। मानव ही एक ऐसा प्राणी है जिसमें बुद्धितत्व है और वह विवेक से कार्य करता है। बुद्धि ही मानव को अन्य प्राणियों से भिन्न करती है। आत्मा तो सब में है। सभी आत्माएं समान है। मानव ही आत्मचिंतन करता है। वेदों से लेकर के अधुनातन साहित्य तक के सभी ग्रंथ आत्मा, परमात्मा, जीव, जगत के बारे में चिंतन करते है। आत्मा का विवेचन दर्शन शास्त्र का प्रमुख विषय रहा है। जितने भी दर्शन है सभी ने आत्मा के बारे में चिंतन किया है और सत्य का साक्षात्कार करने का प्रयास किया है। आत्मा के स्वरूप के बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। योगी लोग आत्मा के स्वरूप का साक्षात्कार करते है। भोगी लोग इस संसार को ही सबकुछ मानकर उसी में भ्रमण करते है। आत्मा सच्चिदानंद स्वरूप है। इसकी प्राप्ति के बाद किसी भी वस्तु को प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं रहती। सब प्रकार के दोषों से रहित होने पर सम्यक् ज्ञान, ब्रह्मचर्य और सत्य के द्वारा आत्मसाक्षात्कार किया जा सकता है। सम्यक् ज्ञान ही एक ऐसा आचार है जिसके द्वारा निखिल कर्मों का विलय किया जा सकता है। इस ज्ञान की उपलब्धि में ब्रह्मचर्य का पालन करते हुये सत्यानुष्ठान की महती आवश्यकता होती है। सत्य का अनुष्ठान और तपस्या के द्वारा ही सम्यक्ज्ञान की उपलब्धि होती है। सम्यक्ज्ञान से कर्म विलय पुरस्सर आत्मोपलब्धि होती है–

सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा

सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्।

आत्मा को न तो आंखों से देखा जा सकता है, न वाणी से कहा जा सकता है, न तो अन्य इन्द्रियों से उसे जाना जा सकता है, न तपस्या और कर्म से ही उसे जाना जा सकता है। जिसके द्वारा सारी ज्ञानेन्द्रियां अपने–अपने विषय का ज्ञान कराती हैं उसे किस साधन से जाना जाय। इसलिये कहा गया है कि 'ज्ञानप्रसादेन तं पश्यते' अर्थात् ज्ञान के द्वारा ही उसे जाना जा सकता है। जप, तप निखिलकर्मानुष्ठान ये सारे साधन आत्मविषयक आचार में परिगणित हैं, किन्तु ये केवल चित्त शुद्धि तक ही सीमित हैं। भक्ति मार्ग साधक के चित्त को ईश्वर के चरणों में लगा देता है। व्यक्ति अपने सभी गुण–दोषों को ईश्वर को समर्पित कर देता है। ईश्वर में समर्पित कर देने से व्यक्ति का अहंकार नष्ट हो जाता है। सूत्र में फूलों की तरह साधक ईश्वर को अपने अन्तःकरण में स्थापित कर लेता है। भक्ति मार्ग श्रेष्ठ मार्ग है। अतः भारत में इस मार्ग के अनुयायी बहुसंख्यक हैं।